कहानी सुनाने वाली राजकुमारी







पुराने ज़माने में एक राजकुमार रहता था. एक दिन राजकुमार के पिता ने उससे कहा "मेरे बेटे, अब शादी करने का समय आ गया है. मैंने तुम्हारे लिए एकदम सही राजकुमारी चुनी है. वह बहुत दूर समुद्र के उस पार, एक राज्य में रहती है."

"नहीं पिताजी," राजकुमार को जवाब दिया. "मैं केवल उसी राजकुमारी से शादी करूगा जिसे मैं खुद चुनूंगा."

उसके बाद में उन्होंने काफी चर्चा की. "ठीक है," अंत में राजकुमार ने कहा. "मैं आपकी चुनी लड़की से शादी करूँगा - पर एक शर्त पर. आप कोई ऐसी लड़की खोजें जो मुझे एक ऐसी कहानी सुनाए जिसका अंत मुझे नहीं पता हो."

राजा ने सोचा, "यह काफी कठिन होगा क्योंकि राजकुमार बहुत सारी कहानियाँ जानता था.” लेकिन राजा ने सोचा, “मैं एक बड़ा इनाम दूंगा, फिर निश्चित रूप से कोई ऐसी लड़की ज़रूर मिलेगी जो यह करने में सक्षम होगी." और फिर राजा शर्त के लिए सहमत हो गया.


The
and other Tales




दूर, समुद्र के पार के राज्य में, एक राजकुमारी रहती थी. एक दिन उसके पिता, राजा ने उससे कहा. "मेरी बेटी, तुम अब बड़ी हो गई हो. अब तुम्हारे विवाह का समय आ गया है. मैंने तुम्हारे लिए एकदम सही राजकुमार चुना है. राजकुमार के पिता और मैंने शादी की पूरी व्यवस्था कर दी है.“

लेकिन राजकुमारी ने कहा: "बिल्कुल नहीं. मैं कभी भी आपके चुने राजकुमार से शादी नहीं करूंगी. बल्कि मैं खुद अपनी मनपसंद का राजकुमार चुनूंगी. नहीं तो मैं समुद्र में कूद कर अपनी जान ले लूंगी."

"उसके बारे में हम देखेंगे," पिता ने गुस्से में कहा. फिर उसी रात राजकुमारी और उसके माता-पिता अपने शाही जहाज पर सवार हुए और समुद्र को पार करने के लिए रवाना हुए.





कुछ दिन बहुत अच्छे बीते, फिर एक दिन समुद्र में एक भयानक तूफान आया. एक विशाल लहर के टकराने से राजकुमारी के कमरे की खिड़की टूट गई और उसके कमरे में फेन वाला समुद्र का पानी भर गया!



राजकुमारी मदद के लिए चीखी!
लेकिन उस तूफान में किसी को भी उसकी आवाज़ सुनाई नहीं दी.
राजकुमारी तैरती रही और तैरती रही. अंत में वो थक कर एकदम चूर-चूर हो गई. तभी उसका हाथ किसी सख्त चीज़ से टकराया. वो एक संदूक था, जो शाही जहाज के डेक से तूफ़ान के दौरान समुद्र में गिरा था. राजकुमारी ने संदूक को कसकर पकड़ लिया, और फिर वो संदूक पर लेटकर सो गई.




जब राजकुमारी जगी तो सूरज चमक रहा था. संदूक, समुद्र के तट पर पड़ा था. राजकुमारी कहीं खो गई थी. वो भूखी थी, अकेली थी पर जिज्ञासु थी.
संदूक के अंदर क्या था?

एक पत्थर को हथौड़े जैसे मारकर राजकुमारी ने संदूक का ढक्कन खोला. उसे अंदर, एक जोड़ी सूखे और साफ, नाविक के कपड़े मिले.



क्योंकि राजकुमारी के कपड़े एकदम भीग गए थे, इसलिए उसने नाविक के कपड़े पहन लिए. संदूक में चाँदी के सिक्कों की एक थैली भी छिपी थी. राजकुमारी ने सिक्कों को अपनी जेब में रखा. उसने अपने बाल ऊपर बांधकर सर पर नाविक की टोपी पहनी.

कुछ समय बाद चलते-चलते वो एक बड़े शहर में पहुंची. वहां उसे एक सराय दिखी, जहाँ उसने पेट भर कर मनपसंद खाना खाया.
भोजन समाप्त करने के बाद उसने जब ऊपर देखा तो उसे वहाँ एक दीवार पर एक नोटिस चिपका हुआ दिखा :



"जो कोई भी मेरे बेटे, राजकुमार को एक ऐसी कहानी सुनाएगा, जिसका अंत उसे नहीं पता हो, उस व्यक्ति को एक बड़ा, इनाम मिलेगा!"

- राजा

"अहा!" राजकुमारी ने सोचा. "मैं बहुत सारी कहानियाँ जानती हूँ. मैं महल में जाऊँगी और प्रेम से राजकुमार एक ऐसी कहानी सुनाऊँगी, जिसका अंत वो नहीं जानता हो. मैं पुरस्कार जीतकर, एक जहाज खरीदूँगी, और उसमें एक चालक दल नियुक्त करूँगी. फिर मैं जहाज़ में सवार होकर विजयी घर लौटूंगी और अपने मेरे पिता को अपनी क़ाबलियत दिखाऊंगी!" फिर राजकुमारी महल की ओर चली.





उसे राजकुमार के सिंहासन वाले कमरे में प्रवेश कराया गया. लेकिन वहां कोई प्यारा सा, छोटा राजकुमार नहीं बैठा था. वो राजकुमार उसी की उम्र का था.

राजकुमार, ने उस युवा नाविक को देखा, फिर उसने अपने विशाल पुस्तक संग्रह को देखा और कहा, "आपको लगता है कि आप मुझे एक ऐसी कहानी बता सकते हैं, जिसका अंत मुझे न पता हो? सम्भावना यह है कि आप उसमें असफल होंगे, क्योंकि मैंने बहुत सी कहानियाँ पढ़ी हैं. इसलिए कोई भी मुझे आश्चर्यचकित नहीं कर सकता है. आप चाहें तो अभी जहाज़ पर सवार होकर अपने घर वापिस लौट जाएँ."



राजकुमारी ने जवाब दिया, "मुझे डराओ मत!, मैं एक नाविक हूं. मैंने जहाज़ में सात समुद्र पार किये हैं. जबकि आप यहाँ सिर्फ अपने सिंहासन पर बैठे रहते हैं. मैं आपको जो कहानी सुनाऊंगा उसके अंत का आप कभी अनुमान नहीं लगा पाएंगे."

"सच में," राजकुमार ने कहा.

"अच्छा यह सुनो," और फिर राजकुमार ने एक के बाद एक कहानी के कहानियों के नाम गिनाना शुरू किए.

यह सुनकर राजकुमारी का चेहरा पीला पड़ गया.

राजकुमार ने उन सभी कहानियों का नाम बताया था जो राजकुमारी ने कभी पढ़ी थीं, या कभी सुनी थीं, या कभी उनका सपना देखा था! वो भला उसे कौन सी नई कहानी सुना सकती थी?

पर एक पल के बाद राजकुमारी को कुछ याद आया. फिर उसने राजकुमार को यह कहानी सुनाई:

"एक बार एक राजकुमारी जहाज़ में समुद्र को पार कर रही थी. यात्रा के दौरान एक भयानक तूफान आया. चकाचौंध बिजली चमकी. तूफ़ान गरजा. एक विशाल लहर ने राजकुमारी के कमरे की खिड़की तोड़ दी. और फिर राजकुमारी समुद्र में बह गई! वो बहुत डरी थी, और वो मदद के लिए रोई. लेकिन किसी ने भी उसकी गुहार नहीं सुनी और धीरे-धीरे जहाज वहां से रवाना हो गया.

"तूफान बहुत भयानक था," राजकुमारी ने कहानी जारी रखी.

"व्हेल मछलियां, समुद्र में पत्तों की तरह उछल रही थीं. नावें, सूखे पत्तों जैसे एक-दूसरे से टकरा रही थीं. समुद्र पूरी तरह उबाल पर था. कुछ समय बाद वो भयंकर तूफान भी शांत हुआ. फिर वो तूफान कहीं दूर चला गया. राजकुमारी उस ठन्डे, हरे, विशाल, खाली समुद्र में एकदम अकेली थी. आपको क्या लगता है : राजकुमारी ने क्या किया होगा?"

"शायद वह तैरी हो?" राजकुमार ने कहानी में जोड़ा.



"आपने बिल्कुल सही फ़रमाया," राजकुमारी ने कहा. "राजकुमारी तैरती रही, तैरती रही. अंत में वो थक कर इतनी पस्त हो गई कि उसे लगा कि जल्द ही वो समुद्र में किसी पत्थर की तरह डूब जाएगी. पर तभी उसका हाथ किसी सख्त चीज़ से जाकर टकराया. वो चीज़ क्या हो सकती थी?"

"कोई चट्टान होगी?," राजकुमार ने उत्तर दिया.

"नहीं," राजकुमारी ने कहा.

"फिर क्या वो कोई नाव थी?"

"नहीं."

"व्हेल!"

"अच्छी अटकल लगाई. वो सख्त चीज़ कोई चट्टान, नाव, व्हेल या कछुआ नहीं थी."

"फिर वो चीज़ क्या थी?" राजकुमार ने अपने सिंहासन से उठते हुए पूछा.

"वो एक नाविक का संदूक था," राजकुमारी ने कहा, "वो उसी जहाज़ से बहकर आया था जिसपर वो राजकुमारी थी. फिर राजकुमारी उस संदूक पर चढ़ गई और सो गई..."

"एक मिनट रुको!" राजकुमार ने कहा. "क्या आप सोचते हैं कि मेरे जैसा पढ़ा-लिखा सभ्य आदमी आपकी इस काल्पनिक कहानी पर कभी यकीन करेगा? यह कैसे संभव है कि राजकुमारी के जहाज़ का संदूक उसके पास समुद्र में पहुँच जाए? वास्तविक ज़िंदगी में ऐसा कभी नहीं होता है. आपको कहानी को रोचक बनाने के लिए कुछ और शोध करना चाहिए. फिर कुछ देर बाद राजकुमार ने शांत होकर कहा, "हाँ, आपकी कहानी मुझे पसंद आई, कृपा आगे सुनाएं ... "



"मैं वही करूंगा," राजकुमारी ने कहा. "जैसे मैं कह रहा था, राजकुमारी संदूक पर चढ़ गई और सो गई. जब वह जगी, तब संदूक समुद्र तट पर आराम से पड़ा था और सूरज तेज़ी से चमक रहा था. राजकुमारी नहीं जानती थी कि वो कहाँ थी, किस राज्य में थी? वह खो गई थी, भूखी थी, अकेली थी पर जिज्ञासु थी. उस संदूक में क्या था? उसने संदूक को एक पत्थर से मारकर खोला, फिर ढक्कन उठाया. अंदर, साफ और सूखे नाविक के एक जोड़ी कपड़े थे. आज हम अपनी कहानी यहीं समाप्त करेंगे."



"यह बड़ी अजीब सी कहानी है, "राजकुमार ने कहा. "लेकिन कहानी में मुझे कुछ परिचित बात भी नज़र आती है. और आप इसे इतनी अच्छी तरह से सुना रहे हैं, कि कहानी मुझे लगभग सच्ची लगती है. सुनकर ऐसा लगता है जैसे वो लगभग आपका ही अनुभव हो. मुझे आपकी कहानी पसंद आई. मैं अभी तक कहानी के अंत के बारे में निश्चित नहीं हूं. लेकिन जल्द ही मुझे उसका अंत भी समझ में आ जाएगा. कल वापस आकर आप कहानी को जारी रखें."

"चिंता न करें," राजकुमारी ने कहा. "मैं कल वापस आऊंगा."

और जब राजकुमारी ने महल छोड़ा तो उसे पता था कि उसकी कहानी का अंत क्या होगा. वो सरल था. कहानी के अंत में राजकुमार से उसकी शादी होगी. "मुझे वह अंत पसंद है," उसने सोचा. "वो तसल्ली से सब बातें सुनता है, और वह एक अच्छी कहानी की तारीफ भी करता है. मैं उस शाही मूर्ख से कभी शादी नहीं करूंगी जिसे मेरे पिता ने मेरे लिए चुना है."





छह दिनों तक राजकुमारी महल में लौटी और उसने राजकुमार को अपने खुद के उन सभी कारनामों के बारे में बताया, जो उसने नाविक के भेष में शहर में भटकते समय अनुभव किये थे.

उसे पता था कि सातवें दिन उसे कहानी को खत्म करना होगा. उसके सारे पैसे अब ख़त्म होने जा रहे थे और वो कहानी के उसके सही अंत तक पहुंचना चाहती थी जहां राजकुमार और राजकुमारी आपस में शादी करते हैं. एक बार, कहानी सुनते-सुनते राजकुमार ने कहा था, "ओह, मुझे उस साहसिक राजकुमारी से मिलना चाहिए!" वह लगभग रुक गई थी और उसे सच बताना चाहती थी. पर वो पुरस्कार के साथ-साथ राजकुमार को भी जीतना चाहती थी. और क्योंकि उसे कहानी सुनाने में इतना मज़ा आ रहा था इसलिए उसने अपनी कहानी सुनाने का सिलसिला ज़ारी रखा.



तभी एक जहाज बंदरगाह में आया. नीले सागर में बहुत भटकने के बाद राजा और रानी अपनी खोई हुई राजकुमारी की दुखभरी कहानी, राजकुमार के माता-पिता को सुनाने पहुंचे थे.



वे महल में गए और उन्होंने राजकुमार के माता-पिता को अपनी सुन्दर बेटी के समुद्र में बह जाने का दुखद और भयानक समाचार सुनाया.
"यह तो दिल दहलाने वाली खबर है," राजकुमार के माता-पिता ने शाही रुमाल से अपनी आँखें पोंछते हुए कहा.

और फिर वे सभी लोग साथ-साथ दुल्हन के समुद्र में खोने का दुखद समाचार देने के लिए राजकुमार के कमरे में गए.



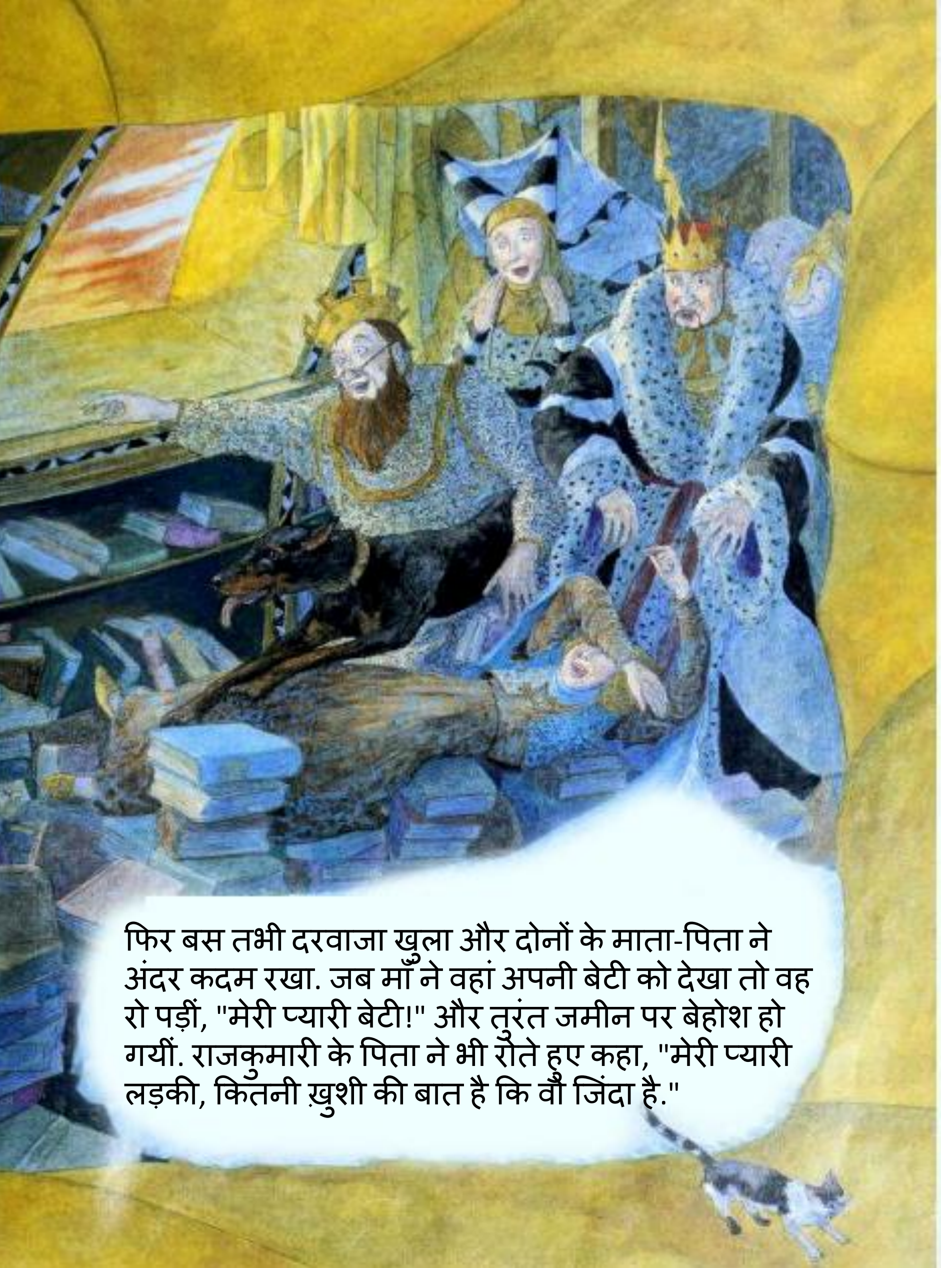


और उसी क्षण, राजकुमारी, राजकुमार के कक्ष में घुसी और उसने उसे कहानी का अंत बताया: "और फिर राजकुमारी, नाविक के कपड़ों में, महल में गई और उसने राजकुमार को एक ऐसी कहानी सुनाई, जिसका अंत राजकुमार को नहीं पता था."

यह सुनकर राजकुमार की आँखें चौड़ी हो गईं. "एक मिनट रुकिए!" उसने अपने सिंहासन से छलांग लगाते हुए कहा, "मुझे मिल गया! मुझे कहानी का अंत मिल गया! आप ही वो राजकुमारी हैं!“

"हाँ," राजकुमारी ने रोते हुए कहा. "लेकिन यह अभी भी कहानी का अंत नहीं है." यह कहते ही राजकुमारी ने नाविक के कपड़े उतार दिए. "इस कहानी के अंत में राजकुमार और राजकुमारी दोनों की शादी होती है."





फिर बस तभी दरवाजा खुला और दोनों के माता-पिता ने अंदर कदम रखा. जब माँ ने वहां अपनी बेटी को देखा तो वह रो पड़ीं, "मेरी प्यारी बेटी!" और तुरंत जमीन पर बेहोश हो गयीं. राजकुमारी के पिता ने भी रोते हुए कहा, "मेरी प्यारी लड़की, कितनी ख़ुशी की बात है कि वो जिंदा है."



उसके बाद राजकुमारी और राजकुमार ने शादी की.
लेकिन यह कहानी का बिल्कुल सही अंत नहीं था. दोनों ऐसे व्यक्तियों से शादी कर रहे थे जिन्हें उन्होंने शादी के लिए खुद चुना था, लेकिन उन्हें इस बात का कोई अंदाज़ नहीं था कि वे उसी व्यक्ति से शादी कर रहे थे जिसे उनके लिए शुरू से चुना गया था.
हाँ, इस कहानी का अंत बहुत सरल है - फिर वे सारी ज़िंदगी ख़ुशी-ख़ुशी रहे.



समाप्त